जनचेतना का प्रगतिशील कथा-मासिक

ISSN 2454-4450

मूल्य ₹ 50

# हंस

जनवरी 2022

## स्मृति विशेष

## मन्नू भंडारी

(1931-2021)

# अनुपस्थिति के उपरांत

रेखा सेठी

## यादों में रची बची

आज मन्नू जी को गए काफी दिन हो गए हैं, फिर भी उनके जाने की खबर अभी भी सहज नहीं होने दे रही. ऐसा लगता है जैसे उनके साथ अपना कोई हिस्सा चला गया. मन्नू भंडारी से मेरा ऐसा कौन-सा निकटस्थ संबंध था, या मुझ जैसी हजारों स्त्रियों का जो कि आज उनके यूं चले जाने पर भीतर कुछ दरक रहा है. संभवतः दूसरी दुनिया उनके लिए कुछ सदय ही होगी. साठ और सत्तर के दशक से लेकर उसके बाद तक मन्नू जी का लेखन एक ऐसा स्त्री-संसार प्रस्तुत करता है जिसमें हमारी पीढ़ी या फिर हमसे कुछ पहले और बाद की भी, उनकी रचनाओं में अपनी परछाइयां ढूंढ़ने लगती हैं. पितृसत्तात्मक समाज की दैनंदिन जीवन स्थितियों में पढ़ी-लिखी, काम-काजी युवा स्त्री जिन अंतर्द्वंद्वों से गुजरती हुई अपनी अस्मिता को पहचानने और जताने का यत्न करती है उसका ब्यौरेवार विवरण उनके कथा-साहित्य में मौजूद है. मन्नू जी की स्त्रियां कोई बहुत रैडिकल विद्रोह कर देती हों, ऐसा उनके जीवन साक्ष्यों या उनके साहित्य से पता नहीं चलता लेकिन 'पितृसत्ता के बीच और पितृसत्ता के खिलाफ' टूटकर बिखर जाने की बजाय वे जिस तरह स्वयं को सहेज कर खड़ी होती हैं, उसमें उनका अस्वीकार और प्रतिरोध स्वतः दर्ज हो जाता है. अपनी स्वतंत्र अस्मिता के एहसास में वे जो चुनती हैं या जो नहीं चुन पातीं-उस प्रक्रिया में जिस मानसिक उद्वेलन से गुजरती हैं, वह उन्हें बहुत उदास और अकेला कर देता है. इस अकेली, उदास स्त्री का साहस उसके अस्वीकार में है.

मन्नू जी को अपने पाठकों या कहूं पाठिकाओं का बहुत प्यार मिला. उनकी कहानियां इतनी लोकप्रिय थीं कि बहुत से फिल्मकार उन कहानियों पर फिल्में बनाना चाहते थे. 'यही सच है' कहानी पर बनी फिल्म 'रजनीगंधा' आज भी स्त्री मन के असमंजस को बखूबी उभारती है. उन्होंने पटकथाएं लिखीं, धारावाहिक लिखे, उपन्यास लिखे, उपन्यास का नाट्य रूपांतर भी किया. अनेक विधाओं में उनकी सहज आवाजाही रही लेकिन वे जिस भी विधा में लिखें वे मूलतः कहानीकार ही हैं. वे हर बात को कहानी बनाकर कह देती हैं और उनके पिटारे में कही-अनकही ढेरों कहानियां हैं. उनके पास कहानी कहने की 'मर्मबेधी' कला है. मर्म तक पहुंचकर 'इन्साइड आउट'... परिस्थितियों और भावनाओं को यूं पलटकर रख देना कि जीवन का दूसरा रुख उजागर हो जाए. ऐसा रुख जो परिस्थिति और मनःस्थिति के द्वंद्व से बन रहा है. मन का भी एक यथार्थ होता है इसे मन्नू जी की कहानियों से ही जाना. जिस समय में मन्नू जी लिख रहीं थीं जीवन जीने की परिपाटी हो या संबंधों के ढांचे, सब कुछ बहुत तयशुदा था. उन्होंने अपनी मर्मबेधी अंतर्दृष्टि से उन ढांचों में उभर आई दरारों को कहानी के केंद्र में लाकर जिंदगी की नई तस्वीर पेश की. ऐसी अधिकांश कहानियों में स्त्री केंद्र में है लेकिन उनका रचना संसार केवल स्त्री जीवन की कशमकश तक ही सीमित नहीं है. अगर ध्यान से देखें तो यह उस व्यक्ति की विवशता की कहानियां हैं जिसे कभी परिवार और पितृसत्ता और कभी सत्ता तथा वर्चस्व के अन्य औजारों से लैस व्यवस्था ने अपने स्वार्थ साधन के लिए इस्तेमाल करते हुए, हर अधिकार से बेदखल कर दिया.

'अकेली' और 'नई नौकरी' (दस प्रतिनिधि कहानियां) जैसी स्त्री संबंधी कहानियां जहां इस सत्य का प्रतिबिंब हैं वहीं 'रेत की दीवार' और 'सजा' जैसी कहानियों में भी व्यवस्था द्वारा छले गए व्यक्ति का दर्द छलकता है. 'रेत की दीवार' कहानी निम्न मध्यवर्गीय परिवार में पढ़े-लिखे बेरोजगार युवा पुत्र रवि की दृष्टि

से लिखी गई है. आर्थिक दबावों के कारण पारिवारिक स्नेह-संबंधों में घिर आए हिसाबीपन की कशमकश रवि को भीतर से तोड़ रही है. यह कहानी अमरकांत की 'डिप्टी कलक्टरी' कहानी की याद दिलाती है. रवि की इंजीनियरी की पढ़ाई के लिए परिवार की सभी जरूरतों को स्थगित किया गया है बहन की पढ़ाई, भाई का इलाज, मां की आंखों का ऑपरेशन किसी तरह एक साल कट जाए रवि इंजीनियर हो जाए और फिर सब जिम्मेदारी साधिकार उस पर होगी लेकिन बेरोजगारी ने सबके सपने तोड़ दिए. इस नई स्थिति में रवि ने अपने संबंधों को नए सिरे से पहचाना जिसका बोध उसके लिए अत्यंत कारुणिक है ''उसे पता भी नहीं लगने दिया और किस तरह बाबू सबके साथ घोड़ी बनकर उकसा-उकसा कर उससे सवारी करवाते रहे. और अब जैसे सब चुपचाप उस पर सवारी करने की प्रतीक्षा कर रहे हैं. "(त्रिशंकु तथा अन्य कहानियां पृ.136)

'सजा' कहानी का केन्द्रीय पात्र भी न्याय व्यवस्था द्वारा छला गया व्यक्ति है. उस पर दफ्तर के बीस हजार के गबन का आरोप है. लंबे-लंबे अरसे के बाद सुनवाई की तारीख पड़ती है और कोर्ट को यह फैसला देने में चार साल से अधिक समय लगता है कि मुलजिम अपराधी नहीं है, उसे बरी किया जाता है. कहानी के नायक की इस विडंबना के विषय में मन्नू भंडारी ने लिखा ''सजा का नायक ऐसी विचित्र स्थिति में रहता है. सजा की यातना भोग रहा था और जब रिहाई का निर्णय हुआ था तो वह इतना टूट चुका था कि इस खुशी को जी सकने की सामर्थ्य ही उसमें नहीं रह गई थी." (मेरी प्रिय कहानियां पृ.7) मन्नू जी की सहानुभूति समाज में छले गए व्यक्ति के प्रति है. ऐसे सभी पात्रों से उनका अटूट रिश्ता है जो लेखक की कलम से सीधे पाठक के मन पर उतरता है और पाठक उस कहानी में अपनी, अपने आस-पास की कहानी पढ़ पाता है. पाठक से यह संवाद और साझेदारी का भाव मन्नू भंडारी की लोकप्रियता का मुख्य बिंदु है और उनके रचना संसार की एक रचनात्मक युक्ति भी.

नई कहानी के दावेदारों ने जिस तरह कहानी के परिवर्तनों को प्रतिष्ठित करते हुए कहानी के स्वरूप और संरचना के बदलावों को शिल्प के स्तर पर केंद्रित किया, मन्नू जी की कहानी कला का लक्ष्य वह कभी नहीं रहा. वे अपनी कहानियों में सरल और सहज तो हैं लेकिन उनका लक्ष्य कहानी कहने की ऐसी शैली विकसित करना है जिसमें लेखक की सजग सक्रिय उपस्थिति बनी रहती है और अदृश्य ढंग से उसमें पाठक को शामिल किया जाता है. उनका दृढ़ विश्वास है कि कथ्य पर शिल्प हावी नहीं होना चाहिए. यह सहजता उनकी रचनाशीलता में विन्यस्त है. स्त्री-लेखन की यह एक बड़ी युक्ति है. उनकी सरलता में एक खास गंभीरता है.

आलोचना जगत में मन्नू जी की कहानियों की संवाद-धर्मिता को साहित्य रचना के उपकरण या एक सुचिंतित रचनात्मक शैली की दृष्टि से गंभीर स्वीकृति नहीं मिली बल्कि इस सहजता को कुछ कमतर आंकने की कोशिश ही हुई जबकि यह साझेदारी और संवाद मन्नू भंडारी के कथा-साहित्य में आद्यांत एक सुचिंतित रचनात्मक युक्ति की तरह उपस्थित है. लेखक पाठक की उंगली थामे अपने रचना संसार में उसे इस तरह साझीदार बना ले कि जैसे उस कथावस्तु या पात्रों की यात्रा केवल उनकी न रहकर पाठक की भी बन जाए. अब यह बिंदु एक अलग रचना-आलोचना दृष्टि की मांग भी करता है.

एक लंबे समय तक साहित्यिक आलोचना के केंद्र में यह प्रश्न बना रहा है कि रचनाकार की रचनाशीलता का प्रमाण क्या होगा कि वह पाठक को रचना में शामिल कर ले या उसे बराबर यह याद दिलाए कि वह एक कहानी पढ़ रहा है और उन स्थितियों, उन पात्रों के प्रति पाठक की निर्मम तटस्थता को जीवित रखे. बीच-बीच में मन्नू जी ने ऐसी युक्तियां अपनाने की कोशिश की जैसे कि 'स्त्री सुबोधिनी' कहानी में वे पाठक को लगातार याद दिलाती रहती हैं कि यह एक तरह से एक कमजोर लड़की की कहानी है, उनकी अपनी कहानी नहीं है. फिर भी अधिकांश कहानियों में खासतौर पर स्त्री-संबंधी कहानियों में जो स्त्री मौजूद है उसका संबंध आजादी के बाद की उस पहली पीढ़ी से है जो पढ़ी लिखी, कामकाजी महिला है. द्वंद्व इस बात को लेकर है कि उसके पास आर्थिक स्वतंत्रता का आधार तो है लेकिन यह स्वतंत्रता परिवार द्वारा निर्देशित और अनुशासित है. व्यक्ति की स्वतंत्र अस्मिता की कसौटियों पर वह बार-बार स्वयं को छला गया और टुकड़ों में बंटा-बंटा महसूस करती है. 'नई नौकरी', 'बंद दराजों का साथ' या फिर उनका उपन्यास 'आपका बंटी' स्त्री की इसी विवशता की कथाएं हैं. आज भी जब मैं इन कहानियों पर सोचती हूं तो न केवल मन्नू जी बल्कि उनकी समकालीन उषा प्रियंवदा और कुछ बाद की रचनाकारों की पूरी पीढ़ी याद आती है जिनके साहित्य में स्त्री अस्मिता का बोध परंपरागत संस्कारों तथा आधुनिकता की जमीन पर पनपती नई सोच के संघर्ष से प्राणवान होता है. यह असमंजस और द्वंद्व स्त्री साहित्य की

अमूल्य निधि है जो उसे अधिक मानवीय तथा विश्वसनीय बनाती है.

साठ और सत्तर के दशक की कहानियों में बदला हुआ परिवेश तो था ही लेकिन उसका सबसे ज्यादा प्रभाव संबंधों के ढांचों पर पड़ा. चाहें वह व्यक्ति और व्यवस्था के बीच अनेक क्षेत्रों में फैले हुए संबंध हों या पारिवारिक स्तर पर बिल्कुल घरेलू संबंध. इस परिवर्तन की चुभन सबसे ज्यादा स्त्री-पुरुष संबंधों में महसूस की गई. स्त्री की आत्म-निर्भरता अपने स्वतंत्र अस्तित्व के प्रति सजगता ने उसके सम्मुख नए प्रश्न खड़े किए. उसके इर्द-गिर्द स्त्री मर्यादा, नैतिकता और आचरण के जो ढांचे थे, स्त्री ने उनके बीच अपनी सही स्थिति को आंकना चाहा और इस प्रक्रिया में अपने लिए समाज द्वारा निर्मित नैतिक मूल्य व्यवस्था के छद्म को गहराई से महसूस किया. सभ्यता के विकास के प्रत्येक चरण में नैतिक-अनैतिक के प्रश्न स्त्री को बार-बार अग्नि-परीक्षा के लिए खड़ा कर देते हैं. 'एक दुनिया समानांतर' की भूमिका में राजेंद्र यादव ने लिखा "आज सामाजिक नैतिकता और व्यक्तिगत नैतिकता एक-दूसरे की विरोधी दिशा में जा पड़ी हैं." (पृ.38) मन्नू भंडारी की कहानियां भी इन बढ़ते हुए अंतर्विरोधों के बीच स्त्री के लिए नए सत्य की तलाश हैं. 'यही सच है' कहानी स्त्री-पुरुष के प्रेम-संबंध को एक नए दृष्टि से देखने का प्रयत्न है. प्रेम का यह रूप मात्र भावुकता पर टिका हुआ नहीं है बल्कि ठोस संदर्भों, परिस्थितियों से समर्थित रूप है. दीपा के लिए कभी निशीथ का स्पर्श सत्य हो जाता है तो कभी संजय का. यह द्वंद्व, असमंजस उसे अधिक मानवीय रूप में प्रस्तुत करते हैं. सही और गलत, स्याह और सफेद के पदानुक्रम को तोड़ते हुए दीपा संबंधों के उस ढांचे से बाहर निकल आई है जो उसे परंपरा से हस्तांतरित हुआ है. यहां मन्नू जी की उस लेखकीय युक्ति को भी ध्यान रखना चाहिए जिसमें सभी पात्रों की शैक्षिक, कामकाजी पृष्ठभूमि उजागर होती है. पूरी कहानी में संजय का दफ्तर और उसकी छोटी-मोटी राजनीति साफ झलकती है. यही संजय का मानस निर्मित करती है. दीपा भी उस अनुभव को नए सिरे से इसीलिए पहचान पाती है क्योंकि उसका शोध का अनुभव, उसकी पढ़ाई-लिखाई उसे वैचारिक प्रश्न अकुलता से भरते हैं. वह ऐसी किसी पूर्व-निर्धारित भूमिका, जिसका प्रतिबिंब जीवन से भी बड़ा है, उसे वह केवल यूं ही नहीं स्वीकार कर सकती. वह अपने हर अनुभव को अपनी तई एक ईमानदारी से महसूस करना चाहती है और महसूस करने की उस प्रक्रिया में समझ पाती है कि जीवन उतना सीधा-सरल, सच्चा-झूठा, स्याह-सफेद नहीं है. गुजरता हुआ हर पल एक नया अनुभव देता है और हर वह अनुभव जिससे वह गुजर रही है सच्चा और खरा है. अलग-अलग क्षणों में अलग-अलग अनुभव को ईमानदारी से जीती हुई दीपा उस पूरे समाज में, परिवार में, संबंधों की कसौटी पर एक नई चुनौती उपस्थित करती है. यह चुनौती गतिशील है और स्त्री अनुभव के दायरे को विकसित करती है. पूरी कहानी में किसी भी पात्र के प्रति लेखक की पक्षधरता को नहीं पढ़ा जा सकता. वह असमंजस, वह द्वंद्व ही सत्य है.

मन्नू भंडारी की अधिकांश कहानियां संबंधों की कहानियां हैं. स्त्री-पुरुष संबंध की कहानियों में विशेष रूप से दो के बीच तीसरे के आ जाने से संबंधों के बदलते समीकरण, नैतिक बदलाव और मध्यवर्ग की सुशिक्षित स्त्री के अस्मिता बोध से परिवार के ढांचों में पैदा हुई दरार की सूक्ष्म पहचान उनकी कहानियों को अतिरिक्त आयाम देती है. इन सब परिवर्तनों से मन में एक अजब दो चित्तापन घर कर लेता है मन्नू जी उसी को कहानी का केंद्र बना देती हैं जैसे 'त्रिशंकु' में हुआ. एक बार फिर परंपरागत संस्कार और आधुनिकता बोध की टकराहट से कहानी का ग्राफ बनता है. त्रिशंकु कहानी इस प्रकार की संक्रांत मनःस्थिति का अभूतपूर्व उदाहरण है. इस कहानी की मम्मी ने अपनी इच्छा से विवाह करने के लिए अपने पिता के रूढ़िगत संस्कारों को चुनौती दी थी और सारी जिंदगी अपनी सोच और व्यवहार में 'मुक्त रहने और मुक्त रखने' के आधुनिक संस्कार को विकसित करती रहीं. यहां तक कि बेटी पर फब्तियां कसने वाले पड़ोसी युवकों को घर बुलाकर सबके बीच मित्रता के संबंध का सूत्रपात किया लेकिन शेखर और तनु की यह मित्रता जब प्रेम संबंध में विकसित हो गई तब मम्मी बर्दाश्त न कर सकीं. ऐसे में तनु के लिए सबसे बड़ी समस्या यह हो गई : "पर इस मम्मी से लड़ा भी कैसे जा सकता है जो एक पल नाना होकर जीती है तो दूसरे पल मम्मी होकर."(त्रिशंकु तथा अन्य कहानियां पृ.132)

ऐसी कहानियों में सरलता का स्थान सांकेतिक व्यंजना ने ले लिया है. 'अकेली' कहानी की आरंभिक पंक्तियों को देखिए "सोमा बुआ बुढ़िया हैं. सोमा बुआ परित्यक्ता हैं. सोमा बुआ अकेली हैं." (दस प्रतिनिधि कहानियां पृ.11) तीन छोटे-छोटे वाक्य हैं लेकिन पूरी कहानी में पाठक के मन पर बजते रहते हैं. आप इनके प्रभाव से मुक्त नहीं हो पाते. कहानी में सोमा बुआ के अकेलेपन को इन वाक्यों से एक

निश्चित आधार मिलता है. मन्नू भंडारी जिन कथाओं की रचना करती हैं वे उन्हें बुनने में घटना बहुलता में नहीं जातीं, इसीलिए अनावश्यक विस्तार नहीं है. घटनाएं या वर्णन उतने ही हैं जितने उस कसक को संप्रेषित करने के लिए जरूरी हैं.

उनके जाने के बाद से ही उनके राजनीतिक बोध की काफी चर्चा हो रही है और चर्चा के केंद्र में है–'महाभोज उपन्यास'. गहराई से देखा जाए तो उनके दोनों ही उपन्यास गहरी राजनीतिक समझ के उपन्यास हैं. एक में देश की राजनीति केंद्र में है तो दूसरे में संबंधों की राजनीति. शकुन, अजय तथा डॉक्टर साहब के संबंधों के त्रिकोण में बंटी कब शतरंज का मोहरा बन जाता है, उस ओर किसी का ध्यान नहीं जाता. बंटी की स्थिति से भी ज्यादा पेचीदा है शकुन की अपनी भावनाओं का उतार-चढ़ाव. वह स्वयं कभी बच्चे के लिए अपने स्वत्व न्यौछावर करने वाली मां बन जाती है तो कभी अजय के खिलाफ उसे हथियार बनाकर इस्तेमाल करने वाली स्त्री. इस पूरी प्रक्रिया में उसका थका-हारा मन पाठक को भी गहरी खिन्नता और उदासी से भर देता है. शकुन का असमंजस, उसके मन की पीड़ा, स्वत्व तथा ममत्व के बीच चौड़ी होती खाई सब पाठक के मन को उद्वेलित करते हैं. उपन्यास के अंत तक गहरी उदासी मन को घेरने लगती है. शकुन की मनःस्थिति का वर्णन करते हुए जो ब्यौरे मन्नू जी ने दिए वे इस उपन्यास की उपलब्धि हैं. इन उपन्यासों में भी मर्मबेधी कथा-रचना की पद्धति प्रमुख है जो संवादधर्मी भी है और नाट्यधर्मी भी. मन्नू जी की कहानी कहने की कला में ही एक खास तरह की नाटकीयता और संवाद-धर्मिता शामिल है. 'महाभोज' के संवाद शतरंज के खेल में चलने वाली शह और मात की तरह कहानी को आगे लिए चलते हैं. संभवतः इसीलिए 'महाभोज' के इतने नाट्य मंचन हुए.

'महाभोज' इस दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है कि इसके मूल में लोकतंत्र के नकाब में लिपटी भारत की राजनीति की स्वार्थ लिप्सा का असली चेहरा सामने आता है. नागरिक की हैसियत से यह उपन्यास सक्रिय लेखकीय हस्तक्षेप का नमूना है. राजनीतिक नृशंसताएं बद से बदत्तर हुई हैं और उनके बीच इस उपन्यास की प्रासंगिकता भी पुनःप्रतिष्ठित होती रहती है. यह उपन्यास 'स्त्री-लेखन' को सीमित दृष्टि से देखने की आलोचकीय पद्धतियों पर भी प्रश्न चिन्ह लगाता है. इसके सरोकार या अभिव्यक्ति की शैली में कहीं भी लेखक का स्त्रीत्व मुखर नहीं होता लेकिन पक्षधरता और सहानुभूति सहज ही व्यवस्था द्वारा छले गए व्यक्ति के पक्ष में है. मन्नू भंडारी ने इस उपन्यास के माध्यम से अपनी न्याय चेतना को अभिव्यक्त किया है. जैसे बार-बार कहा जाता है कि स्त्री आंदोलन प्रत्येक वंचित जन का आंदोलन है. वह हर प्रकार की ताक़त और सत्ता के खिलाफ है. वह हर प्रकार की ताकत और सत्ता के खिलाफ है.

उनकी कुछ बहुत भावपूर्ण स्मृतियां मेरे मन में हैं. वे एकदम मद्धिम आवाज में धीरे-धीरे बोलती थीं लेकिन उनकी हर बात में एक अलग वजन था. वे कम बोलतीं. आंखों की गंभीरता उनके शब्दों के खरेपन और ईमानदारी का पता दे देती. उनके हाव-भाव और चेहरे पर सहज पारदर्शिता का भाव रहता जो सुनने वाले को आश्वस्त करता. जीवन में जितनी भी बार उनसे मिलने का अवसर मिला एक अनकही आत्मीयता महसूस हुई. पहली मुलाकात मिरांडा हाउस में ही हुई थी. जिन दिनों मैं स्वतंत्रता के बाद की हिंदी कहानी पर पी.एच.डी. कर रही थी तब उनकी सब कहानियां खोज-खोज कर पढ़ीं. 'एक प्लेट सैलाब' ऐसा कहानी संग्रह था जो न बाजार में उपलब्ध था न विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में. मैं उनसे मिलने गई और उन्होंने कहा कि वे किताब ढूंढ़कर मुझे देंगीं लेकिन वह किताब उन्हें नहीं मिली जिसका उन्हें बहुत खेद रहा.

उनकी मित्र और हिंदी की प्रसिद्ध आलोचक निर्मला जैन की 80वीं वर्षगांठ पर इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में हुए आयोजन में वे मुख्य अतिथि थीं. हॉल के बाहर जब उनसे मिली, अभिवादन में हाथ जोड़े तो उन्होंने मेरे हाथ उसी तरह अपने हाथों में ले लिए. उनके स्पर्श की गरमाहट आज भी अपने हाथों पर महसूस कर सकती हूं. मैंने आग्रह किया कि अपनी छात्राओं से आपको मिलवाना चाहती हूं यदि किसी दिन वे कॉलेज आ सकें. उन्होंने न में सिर हिला दिया और बोलीं अब सुनाई नहीं देता. मैंने फिर इसरार किया कि मैं छात्राओं को लेकर उनके घर पहुंच सकती हूं उन्होंने फिर इंकार किया और कहा कि वे आश्वस्त महसूस नहीं करतीं कि ठीक से बात कर सकेंगी. इस सारी बातचीत के बीच मेरे हाथ वे अपने हाथों में लिए रहीं. उनकी आंखों में स्नेह के साथ-साथ असहायता की छाया भी थी. मेरे लिए इन मन्नू जी का मिलान उन मन्नू जी से करना कठिन था जिन्हें मैं लगभग दस बरस पहले अपने शोधकार्य के संबंध में मिली थी. मेरी शोध निर्देशक निर्मला जैन थीं उनके घर पर मन्नू जी और राजेन्द्र जी से कई बार मिलना हुआ था. उनके बाकी मित्रों के लिए मैं केवल एक गुमनाम

शोधार्थी थी लेकिन मन्नू जी हर बार मिलने पर दो-एक बात करतीं, हाथ पकड़ती, कभी कभी पीठ सहला देतीं और आंखों से स्नेहपूर्ण अभयदान देतीं. उनकी यह स्नेहिल छवि मैं कभी भी नहीं भुला सकती.

मन्नू जी को जो लोग जानते हैं और जिन्होंने उन्हें मिरांडा हाउस में पढ़ाते करीब से देखा है वे आज भी उस कॉलेज के गलियारों में उनकी उपस्थिति महसूस कर पाते हैं. मेरी एक सहयोगी मित्र ने उन दिनों की मन्नू भंडारी के विषय में कहा था कि वे दो कक्षाओं के बीच के अंतराल में दौड़ी-दौड़ी पुस्तकालय की ओर जा रही होतीं कि समय मिला है तो कहानी पूरी कर लूं. उन्हें जानने वाले ये अक्सर कहते हैं कि वे अनेक कामों के बीच लिख लेतीं थीं. उन्हें जिंदगी ने न फुर्सत के पल दिए, न अकेला कोई कोना जिससे वे व्यवस्थित ढंग से लिख पातीं. फिर भी उन्होंने लिखा, खूब लिखा, पूरी ईमानदारी से लिखा और उन्हें पाठकों का प्यार व सम्मान प्राप्त हुआ. आलोचना की दुनिया में उन्हें जो मान्यता मिली वह कुछ सीमित ढंग से ही मिली. शायद अपने साथी रचनाकारों की तरह उन्होंने कभी कोशिश नहीं की कि कोई चमत्कृत कर देने वाली कहानी लिख दें. सहजता और ईमानदारी ही उनके लेखन का आधार रही. लेकिन उन्होंने जिस जीवट से लिखा उसमें उन्होंने स्त्री रचनाकारों की एक पूरी पीढ़ी को रचनाशीलता के लिए प्रेरित किया. कभी-कभी लगता है उनका पूरा मूल्यांकन अभी नहीं हुआ. उनके शेष हो जाने पर जो प्रतिक्रियाएं आ रही हैं वे आश्वस्त करती हैं कि सबका ध्यान एक बार फिर मन्नू जी के अवदान पर गया है और सबके मन में यह इच्छा जागी है कि उनके जीवन तथा लेखन को फिर से पढ़ा व समझा जाए.

❒

*संपर्क : प्रोफेसर इंद्रप्रस्थ कॉलेज फॉर वुमेन*
*दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली*
*मो. 9810985759*
*ईमेल : reksethi22@gmail.com*

**गोमती देवी स्मृति समारोह**

**अभिनंदन एवं काव्यांजलि**

तिथि व समय : 12 फरवरी, 2022, शनिवार
अपराह्न तीन बजे से
स्थान : रुद्राक्ष कन्वेंशन सेंटर, सिगरा, वाराणसी

**सम्मान समारोह : गोमती देवी विशिष्ट सम्मान-2022**

1. शिक्षा-साहित्य-कला-संस्कृति
2. विज्ञान, प्रौद्योगिकी, पर्यावरण व चिकित्सा विज्ञान
3. उद्यमिता, नवाचार एवं कौशल विकास
4. लोकसेवा एवं सामाजिक कार्य
5. खेल, योग और स्वास्थ्य
6. महिला सशक्तिकरण, दिव्यांग जनकल्याण
7. जीवनभर की उपलब्धियों के लिए (लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड)

*काशीक्षेत्र की 11 विभूतियों का सम्मान एवं अलंकरण*
*कवि सम्मेलन एवं मुशायरा

आमंत्रित कवि गणः
विष्णु सक्सेना, अरुण जैमिनी, मदन मोहन दानिश, अंकिता सिंह, अतुल वाजपेयी, मनीष बादल, डॉ. भावना श्रीवास्तव

बृजेश सिंह एवं समस्त नवभारत निर्माण समिति परिवार
(समन्वयक एवं सचिव)
नवभारत निर्माण समिति, वाराणसी

**पंजीयन संख्या : V/799 (2005-06)**

(ग्रामीण विकास, समाज कार्य, महिला सशक्तिकरण, शिक्षा, साहित्य-कला-संस्कृति की स्वयंसेवी संस्था)

ईमेल : navbharatnirmansa@gmail.com
संपर्क/व्हाट्सएप: 8750029806
www.navbharatnirmansamiti.org

सौजन्य से :
**जी.डी. मेमोरियल यॉन्कर्स इंग्लिश स्कूल, लालगंज, आजमगढ़ (उत्तर प्रदेश)**